मुक्ति की आकांक्षा

कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

प्रस्तावना :

स्वतंत्रता एक ऐसी चीज है जिसके सिवा बाकी सारी चीजें कोई महत्त्व ही नहीं रखती | पशु पक्षियों को लेकर मानवों तक यह भावना, की मैं परतंत्र हूँ बहुत ही दु:खदायक एवं निराशाजनक होती है | इस खुले आकाश के नीचे हर कोई स्वतंत्रता की चाह रखता है |

जिस स्वतंत्रता को हम जन्मसिद्ध हक समझते हैं मानते हैं उसे हमारे देश ने किन संघर्षो के बाद हासिल किया हैं -इतिहास साक्षी हैं |

दोस्तों

पर्यावरण के हमारे साथी –पक्षी भी हमसे कम स्वतंत्र्यप्रेमी नहीं होते |

आएँ उनकी भावना को कवि के शब्दों में समझ ले .....

कविता पर्यायी शब्द देकर टाइप करनी है और उसको पढ़ना हैं |

हम कई प्रकार के प्राणी तथा पंछी पालते हैं |उन्हें प्यार से दाना-पानी देते हैं,उनकी निगरानी रखते है | खुद को उनके दोस्त,उनके शुभचिंतक मानते हैं |

कविता पढने के बाद-समझने के बाद इसी सूचि को आप विभाजित करे-(शीर्षक के अनुसार)

पक्षी के हित में	पक्षी के अहित में

i) सुंदर पिजड़ा बना देते हैं |

ii) उनका चहिता अन्न-धान पिजड़े में रख देते हैं |

iii) बहेलियों से बचाते हैं |

iv) बाहर कि दुनिया से अलग करते है|

ii) खुली हवा से दूर रखते हैं |

iii) मनचाहे अन्न से दूर रखते हैं |

i) बहेलियों के संकट का सामना करना नहीं पड़ता |

iv) केवल कटोराभर पानी मिलता हैं |

आशय :

चिड़िया को लाख समझाओ

कि पिंजडे के बाहर

धरती बहुत बडी है, निर्मम है,

वहाँ हवा में उन्हें

अपने जिस्म की गंध तक नहीं मिलेगी |

सारा दिन-सारी रात चिड़िया को पिंजरे में बंद रहना पड़ता है |यूँ तो हम उसे हर तरह की सुविधा उपलब्ध करा देते हैं –दाना-पानी देते हैं |पर पिजरे में बंद रहना उसे रास नहीं आता |लाख समझाते हैं हम उसे की पिजरे के बाहर दुनिया तो बहुत बड़ी है पर सभी निर्दय हैं | वहाँ का माहोल कुछ ऐसा हैं कि चिड़िया अपनी रक्षा कर नहीं पाएगी | परंतु लाख समझाने पर भी वह हमारा कहना अनसुना करती हैं |

यूँ तो बाहर समुद्र है, नदी है, झरना है,

पर पानी के लिए भटकना है,

यहाँ कटोरी में भरा जल गटकना है

बाहर दाने का टोटा है

यहाँ चुग्गा मोटा है

बाहर बहेलिए का डर है

यहाँ निर्द्वन्द्व कंठ स्वर हैं |

चिड़िया की सभी जरूरते पिजरे में रहकर भी पूरी हो इसकी हम कोशिश करते हैं |कटोरी में उसके लिए पानी तक रखते हैं | हा ,उसे बताते है कि बाहर ढेर सारा पानी हैं | विशाल समुंदर में नदी में | परंतु उस पानी तक पहुँचने के लिए उसे दिन-रात उड़ना होगा-कष्ट करने होगे | यहाँ तो वह बैठे-बैठे पानी पी सकती हैं |

बाहर काफी चारा हैं, धान है चुगने को पर उसको पाने के लिए भी चिड़िया को मेहनत करनी पड़ेगी | और यहाँ पिंजरे में हर चीज उसके सामने हम रखते हैं | उसके सुख स्वास्थ्य के लिए हम कितना ख़याल करते हैं | सबसे महत्वपूर्ण बात हैं की उसकी सुरक्षा का पूरा इंतजाम हम मनुष्य करते हैं | उसे पिजरे मे रखकर बाहर बहेलियों का डर होता हैं | वे तो इसकी प्रतीक्षा में ही होगे | यहाँ वह निश्चित होकर रह सकती हैं |

फिर भी चिड़िया

मुक्ति का गाना गाएगी

मारे जाने की आशंका से भरे होने पर भी

पिंजड़े से जितना अंग निकल सकेगा, निकलेगी, हरसूं ज़ोर लगाएगी

और पिंजडा टूट जाने या खुल जाने पर उड़ जाएगी

क्या सच्चाई यही हैं ? क्या पिंजरे में बंद चिड़िया आराम से रह पाती हैं? क्या वह सुखी हैं?आनंदी हैं? ऐसे सवालों का उत्तर मित्रो –नकारार्थी होता है | वह पिजरे से बाहर जाना चाहती है | बाहर की असुरक्षितता की जानकारी होते हुए भी उसको डर नहीं लगता | वह स्वतंत्र होना मुक्त होना चाहती हैं |वह हर संभव कोशिशे करती रहती हैं | अपने पंख फड़फड़ाती हुई अपनी भावना-आजादी की तड़प व्यक्त करती हैं |

निष्कर्ष:-

पक्षी पिंजरे में सुखी रहते हैं |

पक्षी(मुक्त)पिंजरे से बाहर सुखी रहते हैं |

इसके करण→

१)स्वतंत्रता के आनंद का अनुभव लेते हैं |

२)मुक्त जीवन में सभी उनकी निगरानी रखते हैं |

३)खुले आसमान में विहार कर सकते हैं |

४)उन्हें आजाद रहना पसंद हैं |

५)लोग उनके लिए सभी सुविधाएँ उपलब्ध करा देते हैं |

६)संसार के संघर्ष से वे डरते हैं |

७)वे बहेलियों से बचते हैं |

मूल्याकंन

१. पंछियों को ---------- प्रिय होती है|
   अ. स्वतन्त्रता
   आ. सैर
   इ. उड़ान
   ई. गुलामी

२. पंछियों को ---------- डर रहता है |
   अ. बहेलियों से
   आ. गहराई से
   इ. पत्थरों से
   ई. ऊँचाई से

३. किसी भी तरह के संघर्ष के बाद चिड़िया ---------- |
   अ. मुक्ति का गाना गाएगी |
   आ. शक्ति का गाना गाएगी
   इ. भक्ति का गाना गाएगी |
   ई. मस्ती का गाना गाएगी |

४. पिंजड़े के बाहर की दुनिया ---------- |
   अ. निर्मम है |
   आ. अत्याचारी है |
   इ. दयालू है |
   ई. प्रेममयी है |

Exercise:

आमिर सेठ .....घर में पिंजरे में कई तरह के पंछी रखना .....एक तोता बहुत दु:खी.....उसे दूसरे तोते ने आकर बाहर की बातें सुनाना.....सुनकर आजाद होने की इच्छा .....तरकीब.....चुपचाप पड़े रहना .....नौकर ने सोचना-वह मरा है .....पिजरे का व्दार खोलना .....परिणाम ?.....दोस्तों के साथ उड़ जाना .....

(अपने शब्दों में कहानी लिखिए)

दोस्तों –

पिंजरे में बंद होनेवाली चिड़ियाँ, मैना और कई पंछी परतंत्र हैं ऐसा हम मानते हैं |

क्या पिंजरे के बाहर भी कुछ सामाजिक घटक –आजाद नहीं होते-क्या आपने ऐसा कभी सोचा हैं ? अगर आप का उत्तर 'हां' हैं –तो टाइप कीजिए और सही उत्तर के लिए सही उत्तर पर click कीजिए |

अगर आप उत्तर जान गए हैं तो इसके कारणों की सूचि बनाइए |

उपक्रम :

शिवमंगल सिह सुमन की कविता

पढ़िए |

क्या आपको लगता हैं कि यह कविता 'मुक्ति की आकांक्षा रखनेवाले चिड़िया' का उत्तर हैं .....?

उत्तर

कवि - शिवमंगल सिह सुमन |

हम बहता जाल पीनेवाले मर जाएंगें भूखे प्यासे
कही भला हैं कटुक निबोरी कनक काटेरी की मैदा से
नीड़ न दो चाहे टहनी का आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो
लेकिन पंख दिए है तो आकुल उडान में विघ्न न डालो |

हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएँगे भूखे प्यासे
कही भला हैं कटुक निबोरी
कनक काटेरी की मैदा से
नीड़ न दो चाहे टहनी का आश्रय,
छिन्न-भिन्न कर डालो
लेकिन पंख दिए हैं तो
आकुल उडान में विघ्न न डालो |

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे।

हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबोरी
कनक-कटोरी की मैदा से,

स्वर्ण-श्रृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरू की फुनगी पर के झूले।

ऐसे थे अरमान कि उड़ते

नील गगन की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंचखोल
चुगते तारक-अनार के दाने।

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती सॉसों की डोरी।

नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं, तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालों।